एक कुर्सी, एक मोर्चा और हवा में लटकते लोग

(पर्दा खुलने पर पृष्ठभूमि से आवाज़ उभरती है— यह नाटक उस वक़्त का है जब पांच नदियों की धरती, जो अब तीन नदियों की रह गई, आग में जल रही थी। इस नाटक के पात्र हैं— कुर्सीवाला, आसनवाला और हवा में लटकते लोग। कुर्सीवाला मुख्य पात्र है, वह मुख्यमंत्री हो सकता है, मुख्य प्रबंधक हो सकता है या मुख्य शासक हो सकता है। अगर कुर्सीवाला यहां मुख्य पात्र है तो आसन वाला यहां प्रमुख पात्र है, क्योंकि आसन पर बैठने वाला आदमी खुद को उस ईश्वर का प्रतिनिधि समझता है जिसे इस धरती का प्रमुख संचालक माना जाता है। प्रमुख पात्र जो आसन पर विराजमान है, उसे शिकायत है कि जो मुख्यपात्र कुर्सी पर बैठा है, वह उससे भेदभाव करता है। मतलब कि कुर्सी और आसन की लड़ाई है, इसलिए इनके मुंह भी अलग-अलग दिशाओं में हैं— नाटक का अभिनय स्थल विशाल धरती है, पर इस वक़्त यह सिकुड़कर स्टेज पर पहुंच गया है।

मुख्य और प्रमुख बेशक आजकल आपस में रूठे हुए हैं, पर इनके आपसी रिश्ते बहुत गहरे हैं। दोनों भाई ही हैं, एक बड़ा है, दूसरा छोटा। इनका शरीर एक जैसा, इनका आकार एक जैसा, इनकी आदतें एक जैसी, इनमें से कामकाज कोई भी नहीं करता, दोनों मुफ्त की खाते हैं और दूसरों की मेहनत पर पलते हैं।

नोट : जब यह व्याख्या की जा रही होती है तो दो मोटे आदमी स्टेज पर आते हैं। एक सफेद पगड़ीवाला खद्दरधारी और दूसरा नीली पगड़ीवाला कच्छाधारी (ज्ञानी) क्रमशः कुर्सी और आसन पर बैठे बमुश्किल अभिनय करते हैं, जैसे ताकत से पगलाए सांड हों।) इस नाटक के और पात्र हैं— हवा में लटके हुए लोग। वैसे तो ये आदमी धरती पर चलने वाले हैं, पर कुर्सी और आसन की खींचतान में हवा में लटक गए हैं। आज यहां बहुत गरमागरमी है। हवा में लटका हुआ एक आदमी कुछ गुस्से में है। वह कुर्सी वाले से गिला कर रहा है।)

एक : पर शासन की कुर्सी पर तू बैठा है, हमें अपनी हर तकलीफ तुम्हें ही बतानी है।

खद्दरधारी : मैं कुर्सी पर बैठा हूं, इसका यह मतलब यह नहीं कि हर ऐरे गैरे का मैंने ठेका ले लिया है।

एक : मैं सोलह जमात पढ़ा हूं, मेरे पास काम नहीं है... यह काम तुम्हें देना है... इसकी जिम्मेदारी तेरी है।

खद्दरधारी : तुम्हें मैंने कहा था कि सोलह पढ़... कम पढ़ लेता... क्यों ज्ञानी ?

ज्ञानी : मैं तुम से नहीं बोलता, मैं आजकल मोर्चे पर बैठा हूं।

एक : मैं जब कम पढ़ा था तो तुमने ही कहा था कि तू अभी लायक नहीं है कि कोई जिम्मेदारी संभाल सके, इसलिए अभी और पढ़ ले।

खद्दरधारी : पर तू अब चाहता क्या है ?

एक : यही कि या तो कुर्सी छोड़ दे या बंदोबस्त ठीक ढंग से चला।

ज्ञानी : यही तो मैं इससे कह रहा हूं कि तू कुर्सी से नीचे उतर और राज-पाट हमें सौंप दे।

एक : तो क्या तुम मुझे काम दे दोगे ?

ज्ञानी : काम बेशक दें या ना दें... तुम्हें वाहेगुरु की रज़ा में जीने का सलीका सिखा देंगे और जिसने वाहेगुरु की रज़ा में जीना सीख लिया, उसे तकलीफ कैसी ?

एक : मसला एक नहीं, मसले बहुत हैं... बीमारी है पर इलाज के लिए दवा नहीं है, भूख है, पर पेट के लिए रोटी नहीं है, बेरोज़गारी है, पर रोजगार के साधन नहीं हैं... ये छोटे मसले नहीं हैं, ये लोगों के लिए ज़िंदगी और मौत के सवाल हैं।

खद्दरधारी : मौत की इस धरती को बहुत ज़रूरत है, यहां मरते कम हैं, पैदा ज्यादा होते हैं।

एक : यह तू नहीं तेरे नीचे की कुर्सी बोल रही है।
(जाता है)

ज्ञानी : कुर्सी बोलती नहीं है बुलवाती है।

खद्दरधारी : और तेरा अपने आसन के बारे में क्या विचार है... वह बोलता है या बुलवाता है।

ज्ञानी : न वह बोलता है न बुलवाता है, वह मोर्चा लगाता है और पों दुश्मनों की बजाता है ?

खद्दरधारी : देख लेंगे।

ज्ञानी : देख लेंगे।

खद्दरधारी : तू हलवा गटकने वाला।

ज्ञानी : तू खद्दरधारी।

खद्दरधारी : हमें किसी की परवाह नहीं।

ज्ञानी : 'फट्टे चक्क देंगे'

खद्दरधारी : भगदड़ मचा देंगे।

ज्ञानी : जो अड़े, सो झड़े

(लड़ाई के एक्शन में मौन हो जाते हैं)

मंच के पीछे से आवाज़ : इस तरह कइयों का काम है कुर्सी से चिपके रहना और कइयों का सिर्फ मोर्चे लगाना... पर इस धरती का काम कैसे चलता है, ये जो कुर्सियों पर बैठे खाते हैं... ये जो आसनों पर बैठे खाते हैं आखिर खाते कहां से हैं?

अब एक और पात्र आ रहा है सीधा-सादा, यह भी आपसे मिलना चाहता है।

(एक मेहनतकश आदमी दाखिल होता है।)

दो : क्यों भाई, ठीक है?

खद्दरधारी : ठीक हूं... बाबे की फुल्ल किरपा है... तू आ गया है तेरा ही इंतजार था, एक गिलास पानी दे, सुबह से प्यासा हूं।

दो : प्यासा क्यों रहा... उठकर पी लेता।

खद्दरधारी : *(परेशान होकर)* उठता कैसे?

ज्ञानी : हां, उठता कैसे... कुर्सी का मोह कहीं उठने देता है?

दो : क्यों ज्ञानी, ठीक है? देग तेग फतह है या नहीं?

खद्दरधारी : अभी तो देग ही फतह लग रही है।

ज्ञानी : ओ खद्दरधारी! तुझे 'तेग' भी दिखा देंगे।

दो : ले ज्ञानी, आज की कमाई का दसवां हिस्सा... हमारे लिए अरदास कर देना।

ज्ञानी : तू ऐसे ही श्रद्धा रखना... किसी दिन हम तेरे नाम का भी अखंड पाठ पढ़ देंगे।

दो : अच्छा भाइयो, यूं ही डटे रहो... हमारे सिर पर खाओ-पीयो और ऐश करो। *(जाता है)*

दोनों : बड़ा भला आदमी है।

(मौन हो जाते हैं। एक मजदूर दाखिल होता है; यह एक नंबर भी हो सकता है, कोई अलग पात्र भी हो सकता है। बाहर शोर होता है। आवाज़ें आ रही हैं— छंटनी प्रथा-बंद करो, काम के बदले-

काम दो)

एक : अब तक तू ही कुर्सी पर बैठा है?

खद्दरधारी : हां, अभी तो मैं ही बैठा हूं।

एक : मैं छंटनी हुए मजदूरों की ओर से आया हूं।

खद्दरधारी : मतलब तू भी नेतागिरी की कुर्सी का इच्छुक है।

एक : ये कुर्सियां तुम्हें ही मुबारक हों।

खद्दरधारी : हां, क्या कहना है?

एक : मैं कहने आया हूं कि मजदूरों की छंटनी बंद होनी चाहिए— उन्हें काम के बदले काम मिलना चाहिए।

खद्दरधारी : पर मजदूरों की छंटनी हो क्यों रही है?

एक : हम मजदूरों को डैम बनाने के लिए भर्ती किया गया था... पर अब कहा जा रहा है कि वर्ल्ड बैंक से पैसा नहीं मिला... इसलिए मजदूरों की छंटनी ज़रूरी है।

खद्दरधारी : हां, अगर काम ही नहीं होगा तो मजदूरों को क्या फांसी लटकाना है? उनकी छंटनी तो होगी ही।

एक : पर जो अफ़सर डैम के लिए भर्ती किए गए थे उनकी छंटनी क्यों नहीं हो रही?

खद्दरधारी : भई वे अफ़सर हैं... पक्के सरकारी नौकर हैं।

एक : वे क्या करेंगे?

खद्दरधारी : जो वे किया करते हैं, कागजों में प्लानिंग बनाएंगे।

एक : उन्हें मुफ़्त में खिला सकते हो?

खद्दरधारी : यह हमारी मजबूरी है, तुम समझते क्यों नहीं?

एक : हमारी भी पेट की मजबूरी है, तुम समझते क्यों नहीं?

खद्दरधारी : पर सरकार के पास पैसा नहीं है।

एक : जितना पैसा है, उसे बांटकर खाएं।

खद्दरधारी : अभी तक इस देश में ऐसा दस्तूर नहीं है।

एक : पर यह कहां का दस्तूर है कि कुछ लोग अय्याशी करें और कुछ भूखे रहें... क्यों ज्ञानी जी?

ज्ञानी : *(चौंककर)* क्या कहा?

एक : यह कहां का दस्तूर है कि कुछ लोग अय्याशी करें और कुछ भूखे रहें?

ज्ञानी : हां, दस्तूर तो अच्छा नहीं है... पर अभी हम इसमें कुछ नहीं कर सकते।

एक : क्यों ?
ज्ञानी : क्योंकि अभी हम मोर्चे पर बैठे हैं।
एक : ये मोर्चा क्या होता है ?
ज्ञानी : ये मोर्चा वही होता है, जो हमने लगा रखा है।
एक : पर किसलिए ?
ज्ञानी : हमने एक प्रस्ताव पेश किया है।
एक : कैसा प्रस्ताव ?
ज्ञानी : हमें ज़्यादा अधिकार मिलने चाहिए।
एक : अगर तुम्हें ज़्यादा अधिकार मिल गए तो मेरी छंटनी रुक जाएगी ?
ज्ञानी : कह नहीं सकते।
एक : फिर क्या कह सकते हो ?
ज्ञानी : यही कि हम मोर्चे पर बैठे हैं, जो अड़े, सो झड़े।
(एक; गुस्से की मुद्रा में चला जाता है।)
ज्ञानी : बड़ा गरम था।
खद्दरधारी : खुद ही ठंडा हो जाएगा।
(दोनों मौन हो जाते हैं। एक ग़रीब-सा आदमी आता है।)
गरीब : कुर्सी के मालिको, मुझे एक अर्ज़ करनी थी।
खद्दरधारी : हम अर्ज़ सुनने के लिए बैठे हैं।
गरीब : मैं लुट गया।
खद्दरधारी : यहां हरेक दूसरे को लूट रहा है, हर कोई लूटा जा रहा है।
गरीब : मेरी इज्ज़त लूटी गई है।
खद्दरधारी : इज्ज़त नाम की कोई चीज़ इस देश में बची ही नहीं, तो फिर तेरी इज्ज़त कैसे लुट गई ?
गरीब : मेरी बेटी बाहर खेतों में काम करने गई थी, सरदारों के लड़कों ने उसके साथ ज़बरदस्ती की।
खद्दरधारी : आजकल लोग ज़बरदस्ती बहुत करने लगे हैं, हर कोई दूसरे से ज़बरदस्ती कर रहा है।
गरीब : उसने मारे शर्म के आत्महत्या कर ली है।
खद्दरधारी : मैं इस बारे में सुबह अखबार में बयान दे दूंगा कि आत्महत्या करना कानूनन जुर्म है।
गरीब : मैं थाने गया था।
खद्दरधारी : तुम्हें जाना ही चाहिए था।

गरीब : उन्होंने रिपोर्ट लिखने से इनकार कर दिया है।

खद्दरधारी : क्यों ?

खद्दरधारी : क्यों ?

गरीब : क्योंकि उन्हें सरदारों से पैसा मिल गया था।

खद्दरधारी : अच्छा !

गरीब : थानेदार ने मुझे धमकी दी है कि अगर मैंने मामला उठाया तो वो मेरे खिलाफ केस दर्ज कर देगा।

खद्दरधारी : थानेदार का तो काम ही धमकी देना है, पर तेरे खिलाफ़ क्या केस दर्ज करेगा ?

गरीब : कहता है कि मेरी बेटी का सरदारों के लड़के के साथ नाजायज संबंध था... मैंने उसे रंगरलियां मनाते देख लिया... गुस्से में आकर उसका गला दबाकर मार दिया और फिर कुंए में फेंक दिया।

ज्ञानी : यह धमकी नहीं है, कानूनी कार्रवाई है, जब से इस खद्दरधारी का राज़ चल रहा है, थानेदार इस तरह के 'कानूनी काम' करते ही रहते हैं।

गरीब : आसन वालो, तुम ही मेरी कोई मदद करो।

ज्ञानी : भले आदमी... मदद तो करते, पर हमें फुरसत नहीं है, हम मोर्चे पर बैठे हैं।

गरीब : किस बात का मोर्चा ?

ज्ञानी : चंडी का गढ़ हमें मिलना चाहिए।

गरीब : अगर चंडी का गढ़ मिल जाए तो क्या मेरी बेटी की इज्ज़त सरदारों के हाथ से बच जाएगी ?

ज्ञानी : यह हमारे मोर्चे की मांग नहीं है।

गरीब : क्या थानेदार झूठे केस बनाने बंद कर देंगे ?

ज्ञानी : यह भी हमारे मोर्चे की मांग नहीं है।

गरीब : तो तुम्हारा मोर्चा है किसलिए ?

ज्ञानी : मोर्चा, बस मोर्चा है... जो अड़े सो झड़े।

(गरीब बेबसी के अभिनय में पीछे जाता है।)

खद्दरधारी : ओ ज्ञानी।

ज्ञानी : क्या है खद्दरधारी ?

खद्दरधारी : तेरा सास खेल बढ़िया चल रहा है... जब तक तेरा मोर्चा लगा रहता है, काम बढ़िया चलता रहता है।

ज्ञानी : वो कैसे ?

खद्दरधारी : लोग हमसे सवाल करते हैं, हम जवाब देते हैं, हमसे निराश होकर वे तुम्हारी तरफ आते हैं, जब तुमसे भी निराश हो जाते हैं तो वे हवा में लटक जाते हैं... ।

(दोनों हंसते हैं। बाहर से आवाज़ें आती हैं 'अरे मार दिया ज़ालिमों ने, इन पर खुदा की मार पड़े, इनका बेड़ा गर्क हो'... और एक किसान दाखिल होता है।)

किसान : मालिको !

खद्दरधारी : क्या बात है, भले आदमी ?

किसान : मैं एक किसान हूं।

खद्दरधारी : वो तो तेरी शक्ल से ही दीख रहा है... किसान हमारे देश की आन हैं, हमारे अन्नदाता हैं, बता मैं तेरी क्या सेवा कर सकता हूं ?

किसान : तुम सेवा न करो, कुछ मेहरबानी करो, मैं बहुत दुखी हूं।

खद्दरधारी : तू हुक्म कर... 'गोली किसकी और गहने किसके' ?

किसान : गुलाम तो हम हो गए हैं... दिन-दहाड़े हमारी लूट हो रही है।

खद्दरधारी : वो कैसे ?

किसान : हम फसल उगाते हैं।

खद्दरधारी : वह तुम्हारा फर्ज़ है।

किसान : उसके लिए अच्छे बीजों की ज़रूरत है।

खद्दरधारी : उसका हमने किसान मेले में इंतज़ाम किया है।

किसान : वहां लिहाज वालों को मिलता है।

खद्दरधारी : तो तू भी लिहाज पैदा कर।

किसान : हमें खाद चाहिए।

खद्दरधारी : उसका हमने बड़ा इंतज़ाम किया है, को-ऑपरेटिव स्टोर जगह-जगह खोले हैं।

किसान : वहां से खाद लेने के लिए सौ-सौ चक्कर काटने पड़ते हैं।

खद्दरधारी : ज़िंदगी नाम ही चक्कर काटने का है, कुदरत की सारी कायनात चक्कर काट रही है, चांद धरती के चौगिरदे चक्कर काट रहा है और धरती सूरज के चौगिरदे चक्कर काट रही है।

किसान : और अगर खाद मिलती भी है तो उसमें मिट्टी मिली होती है।

खद्दरधारी : मिट्टी की बहुत कीमत होती है, धरती पर जो कुछ भी है सब मिट्टी पर खड़ा है।

किसान : पर हुजूर यह बेईमानी है।

खद्दरधारी : बेईमानी ? ईमानदार कौन है ? सब कहने की बातें हैं।

किसान : हमारी फसल जब तैयार होती है, पानी बंद हो जाता है। बिजली का भी कट लग जाता है।

खद्दरधारी : हम बिजली महकमे को कह देंगे... वे कट न लगाया करें।

किसान : पर वे कट नाजायज उगाही के लिए लगाते हैं।

खद्दरधारी : वे उगाही क्यों करते हैं ?

किसान : वे कहते हैं उन्हें उगाही करनी पड़ती है।

खद्दरधारी : क्यों करनी पड़ती है ?

किसान : वे कहते हैं अफ़सरों को महीना पहुंचाना पड़ता है, अफ़सरों ने आगे आपके पास पहुंचाना होता है।

खद्दरधारी : फिर तो ठीक बात है... देख तो, यह कुर्सी है, इसके अपने बहुत खर्चे होते हैं।

किसान : पर ये खर्च हमसे क्यों वसूले जाते हैं ?

खद्दरधारी : क्योंकि तुम इस धरती के अन्नदाता हो।

किसान : हमारी फसल जब मंडियों में आती है तो हमारे साथ ठीक सुलूक नहीं होता।

खद्दरधारी : तुम्हारी फसल से ठीक सुलूक नहीं होता या तुम्हारे साथ ? *(...और ऊंघने लग जाता है।)*

किसान : न हमारे साथ और न ही हमारी फसल के साथ... इंस्पेक्टर फसलों को ठुड्डे मारते हैं। हमारे बेटे-बेटियों की तरह उगाई फसलों का निरादर करते हैं।

खद्दरधारी : *(ऊंघने की स्थिति में)* अच्छा, तुम्हारे बेटे-बेटियों को ठुड्डे मारते हैं... पर तुम्हारे बेटे-बेटियां मंडी में करने क्या आते हैं ? उन्हें घर में खेलना चाहिए।

किसान : *(खीजकर)* मैं अपनी फसल की बात कर रहा था।

खद्दरधारी : पर हमने कुछ बेटे-बेटियों की बात सुनी है।

किसान : क्या आप सो रहे हो ?

खद्दरधारी : तेरी बात लम्बी थी... इसलिए ज़रा झपकी आ गई।

ज्ञानी : यह झपकी नहीं थी... खुमारी चढ़ गई थी कुर्सी की।

किसान : ज्ञानी जी, आप ही मेरा दुख दूर करो।

ज्ञानी : भई... हम क्या कर सकते हैं ? हम तो मोर्चे पर बैठे हैं।

किसान : कैसा मोर्चा?

ज्ञानी : रेडियो स्टेशन लगवाने का।

किसान : रेडियो स्टेशन लगवाने का।

ज्ञानी : हां, हम चाहते हैं, हम जो कहें, सारी दुनिया सुने, हम जो उचारें, सारी दुनिया श्रवण करे।

किसान : मैं तो बड़ी देर से जो कुछ भी आपने कहा, सुन रहा हूं। जो कुछ भी आपने उचारा उसे श्रवण किया है, आप ही मेरी कुछ सहायता कर दो।

ज्ञानी : सहायता तो हम कर दें, पर हम मोर्चे पर बैठे हैं... जो अड़े, सो झड़े।

(कुर्सीवाला और आसनवाला फ्रीज हो जाते हैं।)

किसान : कोई कुर्सी पर बैठा है
कोई आसन पर बैठा है
दुनिया मर रही है
पर इन्हें क्या... इन्हें क्या।

(और इस अभिनय के साथ चला जाता है।)

ज्ञानी : *(उसके जाने के बाद)* बेचारा दुखी है।

खद्दरधारी : है तो दुखी... पर उसके तेवर कुछ बदले हुए हैं... कुछ-कुछ मुंह भी खुलने लगा है... कुछ करना पड़ेगा।

ज्ञानी : हां, कुछ तो करना पड़ेगा।

खद्दरधारी : तो फिर कुछ सोच।

ज्ञानी : हमारे पास तो एक ही आजमाया हुआ नुस्खा है... अगर कोई बोले, मुंह खोले तो उसे यही कहते हैं— भले आदमी, दुखी मत हो, उसकी रज़ा में रहना सीख वही सबका सांई है।

खद्दरधारी : और हमारे पास भी वही नुस्खा है, राजसत्ता वाला अगर कोई बोले, पहले उसे समझाओ... अगर न समझे तो धमकी दो... जेल में डालो... ज़बान पर ताला लगाओ। मुंह बंद करो... अगर फिर भी फड़फड़ाए तो मुंह के साथ-साथ सांस भी बंद कर दो... कुर्सी को संभालने का यही सुनहरी नुस्ख़ा है।

(फ्रीज होते हैं।)

बाहर से : आज की ताज़ा ख़बर— आतंकवादियों ने बस में जा रहे छह मुसाफिरों का क़त्ल कर दिया। क़ातिल लापता... क़ातिल लापता।

एक : सुन रहे हो ?

खद्दरधारी : सुन रहे हैं।

एक : क़त्ल हो रहे हैं।

खद्दरधारी : फिर क्या करें ?

एक : तुम मुख्य शासक हो, तुम्हें ही कुछ करना है, लोगों की जान–माल का तुम्हें ही ख़्याल रखना है।

खद्दरधारी : हिंदोस्तान की आबादी 125 करोड़ है... हम किस–किस का ख़्याल रखें ?

ज्ञानी : ये तो उनका ख़्याल भी मुश्किल से रख पाते हैं जो इनकी कुर्सी कायम रखते हैं, किसी को पूरा वज़ीर, किसी को अधूरा वज़ीर, कोई बड़ा वज़ीर, कोई छोटा वज़ीर, कोई सोसायटी का चेयरमैन... कोई बिजली बोर्ड का चेयरमैन और कोई खादी बोर्ड का जेंटल मैन।

खद्दरधारी : तू किसी को क्या कहने लायक है ? जब तू कुर्सी पर बैठा था तो तूने नहीं अपने साले भतीजों को चेयरमैन, जेंटलमैन, 'लफटैन' बनाया था... तेरी तो आदत है... बस बैठा–बैठा लोगों को उकसाता रहेगा और दंगा करवाता रहेगा।

ज्ञानी : *(भेदभरी आवाज़ में)* मैं कब करवाता हूं दंगा। इस हमाम में मैं भी नंगा... तू भी नंगा। जितनी ढंकी रह जाए, उतना ही अच्छा है।

एक : फिर क़त्ल कौन करवा रहा है ?

खद्दरधारी : यह ज्ञानी करवा रहा है... और कौन करवा रहा है ?

एक : सारी पुलिस तुम्हारे पास है, तुम पकड़ते क्यों नहीं ?

खद्दरधारी : पकड़ तो लें, पर ये ज्ञानी उन्हें अपने आसन के नीचे छिपा लेता है।

एक : तुम आसन के नीचे से पकड़ो।

खद्दरधारी : नहीं, हमारी पुलिस आसन के नीचे नहीं जा सकती, हम इस आसन की मर्यादा को भंग नहीं कर सकते।

ज्ञानी : यह झूठ बोलता है, आसन के नीचे वे हवा में उड़कर नहीं आ जाते, ये क़त्ल इसी के आदमी करते हैं... यह उन्हें पकड़ता नहीं और इलज़ाम हम पर लगाता है... असल में यह हमारे मोर्चे को बदनाम करना चाहता है।

एक : *(गुस्से में)* पर तुम्हारे दोनों के खेल में यह धरती बर्बाद हो रही है... सरेआम मासूमों के क़त्ल हो रहे हैं... भाई भई, जो सदियों से

एक साथ रहते आए हैं, एक दूसरे के दुश्मन बन रहे हैं, इसका ज़िम्मेदार कौन है ?

ज्ञानी : ये जो कुर्सी पर बैठा है।

खद्दरधारी : ये जो आसन पर बैठा है।

ज्ञानी : ये... जिसकी कुर्सी के नीचे अंधेरा है।

खद्दरधारी : ये... जिसका आसन पर डेरा है।

ज्ञानी : ये... जो सफेदचोर है।

खद्दरधारी : ये... जो नीला मोर है।

ज्ञानी : ये... जो खद्दरधारी है।

खद्दरधारी : ये... जो कच्छाधारी है।

एक : तुम चुप रहो, तुम दोनों ठग, दोनों चोर... अब तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, तुम्हारी झूठी पोल चौक में खोलेंगे।

(गुस्से में चला जाता है। थोड़ी देर एक दूसरे को टुकुर-टुकुर देखते हैं। बिल्कुल चुप।)

खद्दरधारी : ओए ज्ञानी... बात कुछ ज़्यादा ही गरम हो गई है।

ज्ञानी : कोई बात नहीं, ठंडी भी हो जाएगी।

खद्दरधारी : कोई तरकीब लड़ा।

ज्ञानी : *(सिर खुजलाता हुआ)* एक तरकीब है... अगर सुने तो।

खद्दरधारी : सुना, हर बात सुनूंगा... यह कुर्सी मुझे हिलती हुई नज़र आ रही है।

ज्ञानी : तभी तो मैं कह रहा हूं।

खद्दरधारी : क्या कह रहा है ?

ज्ञानी : जितनी देर तू इस कुर्सी पर बैठा रहा, मैंने तेरी सेवा की। लोगों का हुजूम जब भी तेरी कुर्सी की तरफ बढ़ता रहा, मैं उसका रुख बदलता रहा और इस तरह कुर्सी बची रही।

खद्दरधारी : तेरा आसन भी तो बचा रहा।

ज्ञानी : मैंने तेरी इतनी सेवा की है, अब थोड़ी देर मुझे भी इस कुर्सी पर बैठ लेने दे।

खद्दरधारी : तू कुर्सी पर बैठने को तैयार है ?

ज्ञानी : तू आसन पर आजा, बैठा-बैठा थक गया होगा, ज़रा कमर सीधी कर ले।

खद्दरधारी : ले, यह भी कोई बड़ी बात है, पर मेरी एक बात मान ले, कुर्सी की

शान के लिए यह ज़रूरी है कि तेरे सिर पर सफेद पगड़ी हो।

ज्ञानी : आसन की मर्यादा के लिए ज़रूरी है कि तेरे सिर पर नीली पगड़ी हो।

खद्दरधारी : तो फिर पगड़ियां ही क्यों न बदल लें... वैसे भी हम 'पगड़ी बदल' भाई हैं।

ज्ञानी : उठ फिर।

खद्दरधारी : देखना, कोई देख तो नहीं रहा।

ज्ञानी : अगर देख भी लेगा तो हमारा क्या बिगाड़ लेगा।

(पगड़ियां उतारते हैं, अभी बदली पगड़ियों का एक ही पेंच बनाया है कि हवा में लटकता एक पात्र आ जाता है।)

एक : अरे, मक्कारो, अरे गद्दारो, कुर्सी वालो, आसन वालो इतना बड़ा धोखा? तुम अंदर से एक हो और हमें बेकार ही में उलझा रखा है।

(पगड़ी के पेंच उनकी गर्दन में डाल देते हैं, जैसे पगड़ी डालकर उनको खींचना हो।)

ज्ञानी : अरे इन पगड़ियों का तो ख़्याल करो।

खद्दरधारी : इन्हें मिट्टी में मत घसीटो।

एक : क्यों करें ख़्याल?
अब तुम्हारी पगड़ियां उतारने का।
हमारा भी हक़ बनता है
हमने बहुत देर तक अपनी खाल नुचवाकर तुम्हारे दंभ का नाटक देखा है
अब हक़ हमारा बनता है
तुम्हारी पगड़ी उछालने का
तुमने भी खाल उतारने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी
अब हमारा भी हक़ बनता है
अब हमारा भी हक़ बनता है

(दोनों पात्र बाहर का हाथ ऊपर उठाते हैं और अंदर के हाथ से पगड़ी का छोर खींचते हैं और मौन हो जाते हैं। धीरे-धीरे परदा गिरता है।)